IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इतिहास की प्रासंगिकता

डॉ० एस० के0 मेहरोत्रा

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास

बरेली कालेज, बरेली

Abstract

In this paper, relevance of History in modern times have been discussed. The main object of History is to study past in the present context. Lessons of History have always been important. In the words of R.G. Collingwood and Croce. All history is contemporary History. We can't forget our past while framing the future. Every incident, revolution, thought etc enlighten us for the letter future. They warm us for the wrong doing in the past.

In every aspect of life political, social, religious, etc. History shows us the way. If we want better future, we have to look the past-the lessons History has given.

Keyword : Historiography, Importance of History, Relevance of History, Lessons of History, Theories of History, E.H. Carr; R.G. Collingwood, B. Schiekh Ali.

इतिहास का शायद सबसे महात्वपूर्ण पहलू यही है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इतिहास कितना प्रासंगिक है जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकार ई0एच0कार0 ने लिखा है कि इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच एक अनंत सवांद है तथा इतिहासकार का मुख्य कार्य वर्तमान के संदर्भ में अतीत का अध्ययन करना है।[1] इस कथन में सबसे प्रमुख बात यही है कि इतिहास की उपयोगिता वर्तमान के सम्बन्ध में ही महत्वपूर्ण होनी चाहिये। इतिहासकार मूलतः समाज की जरूरत के लिये लिखता है। मानव समाज सत्त

विकास की अवस्था में रहता है, इसी तरह विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि के विकास क्रम का वर्तमान से अभिन्न सम्बन्ध रहता है। बिना पूर्व अध्ययन के वर्तमान में इनकी उपयोगिता दिखायी ही नहीं जा सकती है। इतिहास का सम्बन्ध उन सारे मानवीय मनोवेगों, चितनों, क्लेषों एंव कर्मों से है जो अतीत में हुए हैं लेकिन जिन्होनें वर्तमान खजाने को भरा है इसी से शाश्वत् परिवर्तन का पता चलता है।[2]

क्रोसे और आर जी कालिंगवुड का यह विचार था कि सब इतिहास समसमायिक होता है और वर्तमान से एक सामान्य और सतत् प्रक्रिया के तहत जुड़ा हुआ होता है। क्रोसे के अनुसार पूरे इतिहास में एक सर्वोच्च भावना होती है। अदृश्य होते हुए भी इसके चार रूप होते है कला, नैतिक तत्व, तर्क और अर्थशास्त्र। इसी आधार पर संसार की सभी घटनाएँ या तो विभिन्न कारणों पर आधारित होती हैं जो तर्क है या अर्थ पर आधारित होती हैं जो अर्थशास्त्र है, या प्यार और नैतिकता पर आधारित होती हैं जो नैतिक तत्व है, अच्छे और सुन्दर कार्यों के रूप में है जो कला है। इतिहास सामाजिक विज्ञान की जननी है और सभी का पोषण इसी से होता है। सामाजिक विज्ञान में इसकी वही प्रधानता है जो प्राकृतिक विज्ञान में गणित की है।[3]

अब मैं कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ क्या विज्ञान का इतिहास, कला का इतिहास, विचारों का इतिहास आदि प्रासंगिक नहीं? किसान आन्दोलन, श्रमिक आन्दोलन, वर्ग संघर्ष, व्यापार, कला, उद्योग, कृषि आदि का इतिहास क्या प्रासंगिक नहीं ? सामाजिक सुधार, पारिवारिक व्यवस्था, पारिवारिक मूल्य, स्त्रीयों की स्थिति, रहन सहन का तरीका आदि का पूर्व अध्ययन क्या प्रासंगिक नहीं ? क्या आज की सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में इतिहास क्या प्रासंगिक नहीं ? हमें इतिहास से ही सबक मिलता है कि कैसे आदमी ने प्रकृति से लड़ाई लड़ी, कैसे अस्तित्व बनाये रखा, कैसे आम आदमी की जरूरतों को पूरा करने के प्रयास किए गये, कैसे भूख और गरीबी को हटाया जा सकता है क्या यह सब प्रासंगिक नहीं ? मानव के स्वतन्त्र होने की पूरी प्रक्रिया ही इतिहास है।[4] प्रत्येक व्यक्ति में कुछ छुपी हुयी योग्यताएँ होती हैं जो स्वतन्त्र हाने पर ही मुखरित होतीं हैं। स्वतन्त्रता के हनन के कारण संसार में अनेक कान्तियाँ हुई। कांलिगवुड ने भी इस उत्तर को खोजने की कोशिश की है कि आखिर इतिहास किस लिये है, उनके अनुसार मानव को मानव की जानकारी देना हो इतिहास है। अपने आप को जानने से मतलब कि तुम क्या हो, किस तरह का व्यक्तित्व तुम्हारे अन्दर है और तुम किस तरह के आदमी बनना चाहते हो। सारांश में तुम्हारे अपने आप को जानने से मतलब कि तुम क्या कर सकते हो।[5]

किसी भी तरह के आर्थिक क्रिया कलाप हों जैसे फैक्टरी लगानी है या बैंक की स्थापना करनी है तो उस परिक्षेत्र के पूर्व अध्ययन के बिना यह सम्भव ही नहीं या सैनिक अभियान हो जैसे कारगिल अभियान आदि जो पूरी तरह से पूर्व अध्ययन पर आधारित होतें है। सैनिक गतिविधियों को बिना इतिहास की मदद के अंजाम दिया ही नहीं जा सकता या कला, विज्ञान, धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, कला आदि का अध्ययन हो सभी में इतिहास उसका अहम् हिस्सा होता है फिर यह कैसे प्रासंगिक नहीं ? वास्तव में मानव जीवन का प्रत्येक अंग इतिहास द्वारा नियंत्रित होता है। वैद्य भी मरीज के पिछले रोग का हवाला

जानकर ही कोई उपचार तय करता है उसी प्रकार राष्ट्र और संस्थाओं का अतीत उसके वर्तमान रूप और व्यवहार को बताता है।[6] अन्धकार को हटाकर प्रकाश की ओर अग्रसर बिना इतिहास के नहीं हो सकता। मानव को उसकी सच्चाई से अवगत कराने वाला यही इतिहास होता है। इतिहास ही उसके भविष्य के रूप रेखा का अधार बनता है। समाज में उसकी जरूरतों को पूरा करने में इतिहास से ही मदद मिलती है। गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी, बीमारी जैसी बुराइयों को भी इसकी मदद से ही दूर किया जा सकता है। पहले जो भी काम इस दिशा में किये गये हों उनकी कमियों को खोजकर फिर से नवीन प्रयास किये जा सकतें है। इतिहास से हमें उन परम्पराओं और सिद्धांतों का पता चलता है जिनका प्रयोग मानव जीवन को खुशहाल बना सकता है और जिनको न करने से हम खतरे में पड़ सकते हैं। पुरानी गल्तियों से सबक लेकर हम भविष्य की योजनाए बना सकते हैं। इतिहास से ही हमें मानव जीवन का सही अर्थ पता चलता है। मानव जीवन के लिये इतिहास के पाठ बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। कभी कभी इसकी घटनाओं की पुनरावृति होती है अतः घटनाओं की पुनरावृति रोकी जा सकती है। यह कम से कम इतना तो बता ही देता है कि कौन सी घटना की सम्भावना है।[7]

जब अंग्रेजों के आने पर भारत में चारों तरफ हताशा का वातावरण था उस समय इतिहास ने ही भारतीयों को उनके प्राचीन, सनातन, सतत् प्रगतिशील संस्कृति और सभ्यता का आधार दिया जिसके कारण भारतीयों को अपने महत्त्व की जानकारी हुई और वो अंग्रेजों का मुकाबला ज्यादा अच्छी तरह कर पाये। इसी जागरूकता का एक परिणाम राष्ट्रीय आन्दोलन भी था। अतीत से हमें एक भावनात्मक और बौद्धिक सन्तोष भी मिलता है।[8] वर्तमान की बहुत सी समस्याओं का हल इसी इतिहास में है कश्मीर समस्या का हल भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। अभी हाल ही में सुनामी लहरों से आई तबाही के बाद ही लोगों व सरकार को यह बात समझ में आयी कि आपदा प्रबन्धन पर पहले से ही ध्यान देना चाहिए था। लातूर में आये भूकम्प, गुजरात में भूकम्प से आयी तबाही आदि के बाद भी हमनें इतिहास से सबक नहीं लिया। पुराने अनुभव के आधार पर ही आगे के जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता इतिहास के आइने से ही है। यहाँ तक की किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति को आगे बढ़ना है चाहे वैज्ञानिक बनना हो, संगीतकार, गीतकार, गायक, पेन्टर, नर्तक आदि आदि जो बनना हो, कोई भी क्षेत्र लें बिना इतिहास के कुछ भी सम्भव नहीं। बच्चों में उसकी प्रासंगिकता और भी बड़ जाती है क्योंकि उसके मस्तिष्क में सोचने समझने की क्षमता का इसी से विकास होता है। यही सन्बन्ध किसी देश के सदंर्भ में भी होता है उसके पुराने नियम, परम्पराएँ, पुरानी संस्थाएं, प्रचलन आदि बातें किसी भी देश का वर्तमान बनाती हैं। इनके बिना वर्तमान को समझा ही नहीं जा सकता। एक इतिहासकार का कार्य भूतकाल से प्यार करना नहीं है न ही उसे भूतकाल की बुराई करनी है न ही भूतकाल से अपने को अलग रखना है वरन् भूतकाल को अच्छे से जानना है जिससे वर्तमान में उसकी छाप को समझा जा सके और वर्तमान को अच्छा बनाया जा सके।[9]

चूँकि यह बात शिक्षा जगत के बीच कही जा रही है इसलिये शिक्षा के क्षेत्र में इतिहास की प्रासंगिकता का जिक्र मैं जरूर एक उदाहरण के माध्यम से करना चाहूँगा। आज की शिक्षा क्या नवयुवकों को कोई आधार दे पा रही या केवल यह डिग्री के लिये भाग दौड़ है ? उसे मिल क्या रहा हे शायद दो वक्त क रोटी भी नहीं? यहाँ मैं गाँधी जो की बुनियादी शिक्षा योजना (वर्धा योजना) का सदंर्भ लेना चाहूँगा। अक्सर यह प्रश्न गाँधी जी को भी लेकर बहुत किया जाता है कि वे वर्तमान में कितने प्रासंगिक है। यहाँ हमें यह देखना है कि वो कितने प्रासंगिक हो सकते है या उनके विचारों को अपना कर हम अपना वर्तमान कैसे अच्छा कर सकते हैं, अगर हम उनकी बुनियादी शिक्षा योजना को ही अपनाएं जो उत्पादक कार्यों के माध्यम से थी, जो रोजगार पूरक थी और जिसमें पुस्तकीय ज्ञान और परीक्षाओं का अनावश्यक बोझ नहीं था तो इसी से शायद हमें आज की बहुत सी समस्याओं का हल मिल जाये। इसलिये जरूरत है कि हम इतिहास को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में और अधिक प्रासंगिक बनायें। आज हम बच्चों में शिक्षा बढ़ाने के लिये उन्हें अनाज बाँटते हैं और पहले से ही उन्हें निष्क्रिय बनाते हैं। जब कि उन्हें एसा बनाने की आवश्यकता है कि वे अपने साथ साथ समाज की जरूरतों को भी पूरा करने में सहायक हो सकें। युवावस्था के हमारे अनुभव, भाषाएँ जो हमने सीखी हैं, जिन परिस्थितियों में हमारा पालन पोषण हुआ है आदि हमारे आचरण का अंग बन जाते हैं तथा आम् परम्पराएँ जो हमारे चरित्र का निर्म करती हैं वर्तमान की क्रियाशील शक्तियाँ हैं। इस दृष्टिकोण से वर्तमान को समझने के लिये इतिहास एक उत्तम मार्ग दर्शक है।[10]

REFERENCES

1. E.H. CARR; What is History, P-6
2. G.R. ELTON; The Practice of History, P-24
3. H.C. Darbey, Quoted from Rai, Itihas Darshan, P-24
4. Lord Acton, Quoted from B, Sheikh Ali, History; Its Theory and Method, P-6
5. R.G. Colllingwood; Idea of History, P-10
6. Carl G. Gustavson; A Preface to History, P-3
7. R.G. Colllingwood; op. cit., P-23
8. G.R. ELTON; op. cit., P-8
9. B, Sheikh Ali, op. cit., P-8
10. Morris R Cohen; The making of human History, P-21

Bibliography

1. Carr; E.H., 'What is History?, Penguin Modern Classics U.K.-1962.
2. Elton; G.R. 'The Practice of History, Fontana Books, U.K.-1967.
3. Roy : Kauleshwar, Itihas Darshan (Hindi), Kitab Mahal Publisher, Allahabad-1975.
4. Collingwood; R.G., 'Idea of History', Read & Co. History, U.K.-2019.
5. Gustavson; Garlg, A Preface to History, Mcgraw-Hill Original Publication, Year 1955.
6. Ali; B. Sheikh, 'History-Its theory & Method Laxmi Publication, New Delhi, 1982.